

रॉबर्ट वानॉय , ओटी इतिहास, व्याख्यान 6

उत्पत्ति 1 "दिन" [योम] - व्याख्या के सिद्धांत

समीक्षा: योम [दिन]

ए. उपयोग 1. सामान्य तौर पर पुराने नियम में उपयोग 2. उत्पत्ति 1 फ्रेमवर्क में उपयोग हम हिब्रू शब्द " योम " -दिन के अर्थ पर चर्चा कर रहे थे । जो आपके कक्षा व्याख्यान की रूपरेखा के पृष्ठ दो के शीर्ष पर है, और हम अभी भी (ए) शब्द के उपयोग के अंतर्गत थे। (ए) मैंने इसे दो उपशीर्षकों में विभाजित किया है: सामान्य रूप से पुराने नियम में उपयोग और फिर उत्पत्ति 1 के ढांचे में उपयोग। हमने सामान्य रूप से पुराने नियम में उपयोग पर चर्चा की थी और जैसा कि मुझे याद है कि हम इसमें उपयोग पर चर्चा कर रहे थे, हम प्रक्रिया में थे। उत्पत्ति 1 की रूपरेखा। बस खुद को जल्दी से पुनः उन्मुख करने के लिए, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, मेरा विचार है कि उत्पत्ति 1 में कई चीजें हैं जो *योम को समझने की ओर इशारा करती हैं* - एक सौर दिन के बजाय रचनात्मक गतिविधि की अवधि के रूप में। जिन चीजों का मैंने उल्लेख किया है उनमें से यह शब्द अन्यत्र प्रयोग किया गया है और अन्यत्र उस प्रकार का अर्थ और उपयोग उत्पत्ति 1 के भीतर उस प्रकार के दृश्य की अनुमति देता है।

दूसरे, चौथे दिन तक कुछ समय के लिए रोशनी का उपयोग नहीं किया जाता है। तो चौथे दिन तक ऐसा नहीं है कि आपके पास सौर दिन होंगे। उससे पहले, अपनी चर्चा में हमने प्रकाश के स्रोत के बारे में कुछ चर्चा की थी।

तीसरा, यदि आप उत्पत्ति 1 की संरचना में "दिन" को समय की अवधि के बजाय एक आलंकारिक पदनाम के रूप में लेते हैं - एक सौर दिन के बजाय - तो वाक्यांश "शाम और सुबह" को एक अभिव्यक्ति के रूप में समझना उचित होगा। समय की उस अवधि की शुरुआत और समाप्ति. हमने उस पर थोड़ी चर्चा की।

फिर , चौथी बात, मुझे लगता है कि यहीं पर हम रुके थे, हमने कई चीजें देखीं, जो छठे दिन घटित हुईं। छठे दिन आपने जानवरों की रचना की, आपने मनुष्य की रचना की, आपने उसे बगीचे में रखा, आपने उसे बगीचे की जुताई का काम सौंपा, आपने जानवरों को

मनुष्य के पास लाया, उसे सभी का नाम रखना था जानवर—हमें यह अध्याय 2 की जानकारी को अध्याय 1 के साथ मिलाने से मिलता है। उसे सभी जानवरों के नाम रखने थे और इस प्रक्रिया में उसे कोई भी ऐसा नहीं मिला जो उसके अनुरूप हो, उसे अपने और सृष्टि के जानवरों के बीच के अंतर के बारे में पता चला। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में सुला दिया, और आदम की पसली निकालकर स्त्री की रचना की, और तब उसने यह उद्घोष किया, "अब, आखिरकार, मेरी हड्डियों में हड्डी और मेरे मांस में मांस है..." इत्यादि। अब सवाल यह है कि क्या यह सब 24 घंटे के सौर दिवस की प्रकाश अवधि के भीतर घटित हुआ? मेरे विचार में, वहां जो कुछ भी हुआ उससे ऐसा प्रतीत होता है कि हम एक सौर दिवस से भी अधिक लंबी अवधि में हैं। मुझे लगता है कि हम यहीं रुक गए। उत्पत्ति 2:23 में, आइए देखें कि एनआईवी शब्द कैसा है, "उस आदमी ने कहा, यह अभी है।" मुझे लगता है कि मैंने घंटे के अंत में ही इसका उल्लेख किया था जिसका बेहतर अनुवाद "अब विस्तार से" किया जा सकता है। वहां आरएसवी कहता है, "आखिरकार यह"-अंततः। "मेरी हड्डियों में से हड्डी, मेरे मांस में से मांस, वह स्त्री कहलाएगी।"

1. सातवें दिन की लंबाई लंबी अवधि है, मैं उत्पत्ति अध्याय 1 में *योम या "दिन"* के उपयोग की इस चर्चा के तहत बस एक और बात कहना चाहता हूं। सातवां दिन, जिस दिन भगवान ने अपनी रचनात्मक गतिविधि से विश्राम किया था, एक है वह दिन जो लंबे समय तक चलता है (कम से कम मैं इसे इसी तरह से देखता हूं) और मेरे लिए वह अन्य छह दिनों की लंबी अवधि के समानांतर होगा। दूसरे शब्दों में, मुझे ऐसा लगता है कि जब यह सातवें दिन के बारे में कहता है कि भगवान ने विश्राम किया, तो उन्होंने अपनी रचनात्मक गतिविधि बंद कर दी और इस अर्थ में विश्राम तब से लेकर वर्तमान तक जारी है। तो यह भी एक लंबी अवधि की बात कर रहा है। यह तथ्य कि विश्राम की अवधि जारी रहती है, इस बात से मेल नहीं खाता कि वह केवल 24 घंटे के सौर दिवस के लिए समाप्त हुआ। उन्होंने अपनी रचनात्मक गतिविधि बंद कर दी और आराम करने लगे। वह अपनी रचनात्मक गतिविधि के संबंध में ऐसा करना जारी रखता है।

तो उत्पत्ति 1 के पाठ से मैं जो निष्कर्ष निकालूंगा वह यह है कि उत्पत्ति 1 में ऐसे कारक हैं जो सुझाव देते हैं कि शब्द "दिन" या *योम* को भगवान की रचनात्मक गतिविधि के समय की अवधि के रूप में समझा जाना चाहिए, जो अनिश्चित है लंबाई। मुझे नहीं लगता कि अध्याय से आप यह बता सकते हैं कि वह अवधि कितनी लंबी या कितनी छोटी थी। मुझे नहीं लगता कि इस तरह की जानकारी दी गई है, लेकिन इससे पता चलता है कि यह अनिश्चित अवधि की अवधि है।

मुझे लगता है कि इस अनुच्छेद का हिब्रू इससे संबंधित है और निस्संदेह यह मेरे निष्कर्ष से भी संबंधित है। लेकिन आपने अध्याय 2 श्लोक 2 में पढ़ा, "सातवें दिन, परमेश्वर ने वह काम पूरा किया जो वह कर रहा था।" इसलिये सातवें दिन उसने अपने सारे काम से विश्राम किया। "और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी, और उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि उस दिन उस ने सृष्टि के सारे काम से विश्राम लिया, जो उस ने किया था।" तो हमें बताया गया कि उन्होंने सातवें दिन सृजन के सभी कार्यों से विश्राम किया था। आप बस उस पाठ पर विचार कर सकते हैं और उसका अर्थ क्या है। क्या इसका मतलब यह है कि लगातार सात 24 घंटे के सौर दिनों की अवधि में कहीं न कहीं शुरुआत में भगवान ने रचनात्मक कार्य से विश्राम किया था? क्या ये सिर्फ 24 घंटे के लिए था, फिर उन्होंने इसे दोबारा शुरू कर दिया? मुझे ऐसा लगता है कि यह जो कह रहा है वह यह है कि छह दिनों की रचनात्मक गतिविधि के बाद उन्होंने रचना करना बंद कर दिया और उन्होंने आराम किया। अब, निःसंदेह, आप इससे धार्मिक रूप से सभी प्रकार के निहितार्थों को समझ सकते हैं। आप पुरुषों की आत्माओं के संबंध में सृजनवाद बनाम परंपरावाद के प्रश्न पर विचार कर सकते हैं। ऐसा कैसे होता है कि जीवन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रसारित होता है? क्या इसमें कोई विशेष रचनात्मक कार्य शामिल है या यह कुछ ऐसा है जो माता-पिता से मिलता है? अब उनमें से बहुत सारे प्रश्न जटिल हैं और जिनके बारे में हमें बहुत से धर्मनिरपेक्ष धर्मशास्त्र बहुत आसानी से मिल जाते हैं। मुझे नहीं पता। मैं इस आखिरी बिंदु को आगे नहीं बढ़ाऊंगा।

एक्सोड पर आधारित सौर दिवस के लिए तर्क। 20 सादृश्य टी वह इसका प्रतिरूप है, और हम शीघ्र ही उस तक पहुंचेंगे। जो लोग 24-घंटे के सौर दिन के लिए तर्क देंगे, वे निर्गमन अध्याय 20 की अपील करके अपने मामले का समर्थन करने के लिए सातवें दिन की सादृश्यता का भी उपयोग करेंगे और छह दिनों की सादृश्यता का उपयोग करेंगे जिसमें आप काम करते हैं, एक दिन आप आराम करते हैं - यह स्पष्ट रूप से सौर दिन है। हम छह दिन काम करते हैं और एक दिन आराम करते हैं, और यदि ईश्वर ने ऐसा किया है तो हमें उसका अनुकरण करना होगा और इसलिए उसने एक दिन आराम किया होगा। अब, उस पर मेरी प्रतिक्रिया यह होगी कि सादृश्य 6 + 1 अनुक्रम में है, जरूरी नहीं कि सौर दिवस ढांचे में हो।

भिन्न-भिन्न राय की अनुमति है

(छात्र द्वारा पूछा गया प्रश्न)। बेशक, मुझे लगता है कि यह एक संकेतक है जो आम तौर पर इस विचार का समर्थन करता है कि उत्पत्ति 1 में *योम शब्द* का मतलब 24 घंटे का सौर दिन नहीं है। मुझे नहीं लगता कि आप इसे साबित कर सकते हैं। मुझे लगता है कि हम इस पूरी चर्चा में एक ऐसे क्षेत्र में हैं जहां राय और निष्कर्षों में अंतर की अनुमति होनी चाहिए। मुझे नहीं लगता कि कोई भी पक्ष यह कह सकता है: यह होना ही चाहिए, यहां पाठ की बाधा क्या है, आपको इस निष्कर्ष पर आना होगा। केवल उन कारणों को बताने से जो मुझे उस निष्कर्ष पर ले गए जिनसे मैं निपट चुका हूँ।

बी। उत्पत्ति के दिनों के मुख्य प्रकार के दृश्य 1 आइए बी पर चलते हैं, हमने इस चर्चा को समाप्त नहीं किया है। बी। है: "उत्पत्ति 1 के दिनों के मुख्य प्रकार के दृश्य।" अब यदि आप अपनी रूपरेखा पर नज़र डालें, तो मैं अभी इसका उल्लेख करना चाहता हूँ ताकि हम चर्चा में न खो जाएँ। उसके अंतर्गत दो उप-बिंदु हैं। 1) "वास्तविक दिन" है और 2) "गैर-वास्तविक दिन" है। अब वह शब्दावली भ्रमित करने वाली हो सकती है। जब मैं "वास्तविक

दिनों" और "गैर-वास्तविक दिनों" के बारे में बात करता हूं तो मैं सौर दिनों बनाम समय की अवधि के बारे में बात नहीं कर रहा हूं। यदि आप अपनी रूपरेखा शीट पर फिर से नजर डालें तो आप देखेंगे कि "वास्तविक दिनों" के अंतर्गत 24 घंटे का सौर दिवस दृश्य है और अनिश्चित लंबाई के दृश्य की समय अवधि है। वे दोनों वास्तविक दिन हैं। एक गैर-वास्तविक दिन के दृश्य से बिल्कुल अलग। अब एक गैर-वास्तविक दिन के दृश्य से मेरा क्या मतलब है, इस पर हम एक मिनट में चर्चा करेंगे। सबसे पहले, आइए उन दो उप-बिंदुओं के साथ वास्तविक दिन के दृश्य को देखें। इस पर थोड़ा आगे चर्चा करने से पहले मैं यह भी कह दूँ।

उत्पत्ति 1 में "दिनों" की लंबाई पर परिप्रेक्ष्य हमें समय की अवधि बनाम 24 घंटे के सौर दिन की इस चर्चा के महत्व पर परिप्रेक्ष्य नहीं खोना चाहिए। यह, किसी भी तरह से, उत्पत्ति अध्याय 1 में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी नहीं है। वह सामान्य शिक्षा जिसे हमने पहले ईश्वर के बारे में, मनुष्य के बारे में, ब्रह्मांड के बारे में देखा था। मुझे लगता है कि उत्पत्ति 1 और 2 में यही महत्वपूर्ण है। क्या दिन अनिश्चित अवधि के अर्थ में लंबा था या क्या यह छोटा था, यह वास्तव में बड़ा मुद्दा नहीं है। इसे नज़रअंदाज़ न करें, नहीं तो आप इसी चर्चा में उलझ जाएंगे और इसके महत्व को परिप्रेक्ष्य से बाहर कर देंगे। लेकिन चलिए फिर इस पर वापस आते हैं।

1) वास्तविक दिनों के लिए 3 दृष्टिकोण वास्तविक दिन, पहला 24 घंटे का सौर दिवस दृश्य। इसके लिए वास्तव में 3 दृष्टिकोण हैं। मैं उनका संक्षेप में उल्लेख करना चाहूँगा। एक लगातार 7 24 घंटे का दिन होगा। दूसरा वह होगा जिसे हमने पहले छुआ था और उत्पत्ति 1 में चर्चा की थी। पुनर्स्थापन या अंतराल सिद्धांत, जो उत्पत्ति 1:2 की क्रिया "बनना" पर आधारित है जहां पृथ्वी खाली हो गई और पृथ्वी के ऊपर अंधेरा छा गया, व्याख्या करता है कि सृष्टि के छह दिन वास्तव में मूल रचना नहीं बल्कि पुनर्गठन हैं। आपके पास प्रारंभिक रचना थी "आरंभ में भगवान ने आकाश और पृथ्वी की रचना की, पृथ्वी शून्य हो गई।" फिर आपके पास पुनर्गठन के छह दिन हैं, आप कह सकते हैं, और इस दृष्टिकोण के अनुसार

सभी भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड, जीवाश्म शामिल हैं, उत्पत्ति 1:2 से पहले के समय में रखे गए हैं। लेकिन फिर आपको अध्याय के छह दिनों में एक पुनर्व्यवस्था, एक पुनर्गठन मिलता है। लेकिन जो लोग उस सिद्धांत को मानते हैं, वे उत्पत्ति 1 के दिनों की छह 24 घंटे की समझ पर कायम हैं। तीसरा दृष्टिकोण वह होगा जिसे अंतर-अवधि सिद्धांत कहा जाता है। विचार यह है कि उत्पत्ति 1 के दिनों के बीच लंबी अवधि थी। इससे भूवैज्ञानिक अभिलेखों को उत्पत्ति अध्याय 1 के ढांचे में रखने की अनुमति मिल जाएगी। लेकिन जिन दिनों की बात की गई है वे 24 घंटे के सौर दिन होंगे, समय की लंबी अवधि के साथ परस्पर जुड़ा हुआ।

यह तीसरा दृश्य-अंतर-काल दृश्य-डॉ. न्यूमैन, आप कह सकते हैं, *उत्पत्ति 1 और पृथ्वी की उत्पत्ति* में भिन्नता रखते हैं। मुझे लगता है ऐसा है। यह एक बहुत ही उपयोगी किताब है, हो सकता है कि आप कभी इसे देखें। मेरा मानना है कि यह आपकी ग्रंथ सूची में है। शायद इस बिंदु के नीचे नहीं, लेकिन पृष्ठ छह पर, पृष्ठ पर अंतिम प्रविष्टि के बगल में, वहां एक प्रविष्टि है जिसका मुझे उल्लेख करना चाहिए था, जिसका मैंने उल्लेख नहीं किया। आरजे स्नो, "छठा दिन कितना लंबा है" एक्लेमन्स पुस्तक में परिशिष्ट 3, *उत्पत्ति 1 पृथ्वी की उत्पत्ति*, इंटरवर्सिटी प्रेस, 1977। आरजे स्नो का वह लेख उस छठे दिन के बारे में एक दिलचस्प और उपयोगी लेख है जिसका हमने अभी उल्लेख किया है कुछ ही मिनट पहले। वह डॉ. न्यूमैन की किताब है। उनका सुझाव है कि प्रत्येक दिन 24 घंटे का होता है, और प्रत्येक दिन 24 घंटे के दिन की एक नई रचनात्मक अवधि खोलता है। ताकि वह दिन को एक लंबी अवधि के रूप में न देखें, बल्कि एक लंबी अवधि की रचनात्मक गतिविधि का परिचय देने के रूप में देखें। अंतर-अवधि सिद्धांत का कुछ रूप, लेकिन जो 24 घंटे के दिन पर आधारित होगा।

वन्नॉय की स्थिति

मुझे लगता है कि इससे मेरा अंतर यह होगा कि, मुझे स्वयं यह निष्कर्ष निकालने की कोई आवश्यकता नहीं दिखती कि अध्याय के दिनों की संरचना में 24 घंटे के दिन होने चाहिए, और विशेष रूप से उस दिन 4 के कारण - वह सूर्य और चौथे दिन तक चंद्रमा को

दिनों की माप के लिए स्थिति में नहीं रखा गया था। तो पहला, दूसरा और तीसरा दिन क्या था? जाहिर तौर पर यह एक सौर दिन नहीं है जैसा कि मैं इसे देखता हूँ। मेरे विचार से मामले की जड़ यही है। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा था, मुझे नहीं लगता कि यह कोई ऐसी चीज़ है जिसमें हमें इतना उलझ जाना चाहिए और बहस में शामिल हो जाना चाहिए कि हम इसे इसके महत्व से कहीं ज़्यादा बढ़ा दें। मुझे लगता है कि विशिष्टता की कमी के कारण पाठ निष्कर्ष में कुछ स्वतंत्रता की अनुमति देता है।

बी। 24 घंटे के सौर दिवस की स्थिति ठीक है, हम 24 घंटे के दिन के दृश्य पर चर्चा कर रहे हैं। मैंने उत्पत्ति अध्याय 1 के संदर्भ में 24 घंटे का दिन कैसे काम करता है, इसकी तीन संभावित वैकल्पिक अवधारणाएँ दीं। मेरे विचार से 24 घंटे के सौर दिन के दृष्टिकोण के पक्ष में तर्क निम्नलिखित हैं। सबसे पहले, अपने प्राथमिक अर्थ में, *योम* या *दिन* शब्द का अर्थ एक सौर दिन है। आम तौर पर हम इसे इसी तरह समझते हैं, और निश्चित रूप से यदि आप किसी अध्याय में आते हैं और इसे पढ़ते हैं तो यह संभवतः आपकी प्रारंभिक समझ है। गैप थ्योरी नंबर 2 होगी जहां आपके पास "आरंभ में भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, पृथ्वी बिना आकार और शून्य हो गई।" आपके पास एक प्रारंभिक रचना है और फिर एक प्रलयकारी परिवर्तन है। इसके बाद आने वाले छह दिन लगातार छह 24-घंटे के दिन होंगे जिसमें उस अराजक स्थिति को पुनर्गठित किया जाएगा। भूगर्भिक समय को उत्पत्ति 1:1 और 1:2 के बीच के अंतराल में धकेल दिया जाता है।

तीसरे दृष्टिकोण में भूगर्भिक समय छह दिनों की संरचना में है, लेकिन इसे छह दिनों से पहले पीछे धकेलने के बजाय इन छह दिनों के बीच में विभाजित किया गया है - यही अंतर है।

सबसे पहली बात तो यह कि *योम* का प्राथमिक अर्थ सौर दिवस है। दूसरे, शाम और सुबह का वाक्यांश उस निष्कर्ष को मजबूत करता है। मुझे लगता है कि यह सबसे स्पष्ट प्रारंभिक समझ है - शाम और सुबह एक सौर दिन की बात करते हैं। जिस समझ के लिए मैं बहस कर रहा था, उसके लिए एक आलंकारिक समझ की आवश्यकता है, और मुझे नहीं

लगता कि यह कोई ऐसी आपत्ति है कि इसने दिन-उम्र के दृष्टिकोण को खारिज कर दिया, लेकिन इसके लिए इसकी आवश्यकता है - शाम और सुबह का उपयोग।

और फिर निर्गमन 20:9-11 जिसका मैंने अभी कुछ मिनट पहले उल्लेख किया था। निर्गमन 20:9-11 में छः दिन तक हम काम करेंगे, और सातवें दिन विश्राम करेंगे, क्योंकि छः दिन में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की, और सातवें दिन विश्राम किया। निर्गमन 20:9-11 के सादृश्य पर तर्क यह है कि दिन को दोनों अनुच्छेदों-उत्पत्ति 1 और निर्गमन 20 के समान अर्थ में लिया जाना चाहिए। तो, ये 24 घंटे के सौर दिन के पक्ष में तर्क हैं।

सी। दिन-आयु सिद्धांत

बी। वास्तविक दिनों के अंतर्गत आपकी शीट पर अनिश्चित लंबाई की समयावधि के रूप में *योम* की समझ है। इसे अक्सर डे-एज दृश्य के रूप में जाना जाता है। हम पहले ही इस पर चर्चा कर चुके हैं, मैंने इसके पक्ष में तर्क दिए हैं, इसलिए इस बिंदु पर हम उस पर वापस नहीं जाएंगे। लेकिन ध्यान दें कि यह एक वास्तविक "दिन" है, भले ही यह अनिश्चित अवधि की अवधि है, फिर भी यह समय की एक वास्तविक अवधि है। यह समय की एक अवधि है जिसमें भगवान ने कुछ चीजें कीं। और भगवान के रचनात्मक कार्य के अध्याय में एक क्रम है। अब डे-एज दृष्टिकोण के साथ अक्सर इस पर आपत्ति उठाई गई है, क्या यह एक ऐसा दृष्टिकोण नहीं है जिसे विज्ञान और बाइबिल में सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास में अपनाया गया है? क्या यही इसका कारण नहीं है? क्या यह दृष्टिकोण कुछ ऐसा नहीं है जिसे विकासवाद और बाइबिल में सामंजस्य स्थापित करने के लिए उत्पन्न या अपनाया गया है? मैं इस बात से इनकार नहीं करूंगा कि उस निष्कर्ष पर पहुंचने का एक बहुत मजबूत आधार है।

विज्ञान और बाइबिल के संबंध पर टिप्पणियाँ

मैं और मैं उस सामान्य क्षेत्र में दो टिप्पणियाँ करना चाहते हैं। सबसे पहले, मुझे

लगता है कि हमें विज्ञान के प्रति शत्रुता और इस खोज के महत्व को कम करने की अनदेखी करने की प्रवृत्ति से बचना होगा। बाइबल में विश्वास करने वाले को रूढ़िवादी नहीं होना चाहिए। बाइबल आस्तिक को जो करना चाहिए वह एक ओर सुस्थापित वैज्ञानिक तथ्यों और दूसरी ओर विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों के बीच अंतर करना है जो वास्तव में निराधार या दार्शनिक रूप से पक्षपाती हैं। तुम्हें भेद करना होगा। ऐसा बहुत कुछ है जिस पर वैज्ञानिक का लेबल लगाया गया है जो वास्तव में वैज्ञानिक नहीं है। लेकिन हमें अपना सिर रेत में नहीं छिपाना चाहिए और वैज्ञानिक अनुसंधान के निष्कर्षों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए या उनके प्रति विरोधी नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक जांच के माध्यम से वास्तविकता की प्रकृति के बारे में बहुत सी चीजें खोजी हैं। वैज्ञानिकों ने जो बहुत कुछ खोजा है वह काफी भ्रामक है। हमें इस बात में अंतर करने में सक्षम होना होगा कि क्या वैध है और क्या मान्य नहीं है। यह एक बात है। हमें विज्ञान के प्रति शत्रुता से बचना चाहिए और इसका विवेकपूर्वक उपयोग करना चाहिए।

लेकिन दूसरी बात, हमें बाइबल के कुछ कथनों को कुछ सिद्धांतों में फिट करने के लिए तोड़-मरोड़कर या जबरदस्ती करके वैज्ञानिक सिद्धांतों और बाइबल के बीच सहमति बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। उससे सावधान रहें। मेरा मानना है कि हमें इससे सदैव सावधान रहना चाहिए। लेकिन ऐसा कहने के बाद, मुझे लगता है कि साथ ही हम यह भी कह सकते हैं कि कभी-कभी वैज्ञानिक खोजें बाइबिल के कुछ पाठों की दोबारा जांच करने का कारण दे सकती हैं ताकि यह देखा जा सके कि वे वास्तव में क्या कहते हैं। अक्सर आप पाएंगे कि पाठ उतना विशिष्ट नहीं हो सकता जितना आपने शुरू में सोचा होगा। और यह वैज्ञानिक जांच और निष्कर्ष हैं जो पाठ को फिर से देखने के लिए प्रोत्साहन या प्रेरणा बन जाते हैं और इसे शायद पहले की तुलना में अधिक ध्यान से देखते हैं, और यह देखने के लिए कि पाठ स्वयं आपको किन मापदंडों में आगे बढ़ने की अनुमति देता है। मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है। मुझे यकीन है कि आप में से अधिकांश लोग फ्रांसिस शेफ़र की *जेनेसिस इन स्पेस एंड टाइम* से परिचित हैं। उस खंड के पृष्ठ 57 पर वह उत्पत्ति 1 के दिनों के बारे में चर्चा कर रहे हैं और मैं उनकी चर्चा का अधिक भाग नहीं पढ़ पाऊंगा, लेकिन

इसके अंत में वे कहते हैं, "इसलिए हमें उत्पत्ति में 'दिन' द्वारा इंगित समय की सटीक लंबाई को खुला छोड़ देना चाहिए।" दूसरे शब्दों में, वह किसी न किसी तरह से सख्ती से पेश नहीं आता। सौर दिवस या समय अवधि का दृश्य। फिर वह कहते हैं, "हिब्रू में शब्द के अध्ययन से यह स्पष्ट नहीं है कि इसे किस तरह से लिया जाए। यह किसी भी तरह से हो सकता है। शब्द के प्रकाश में, जैसा कि बाइबिल में उपयोग किया गया है, और डेटिंग की समस्या के संबंध में विज्ञान की अंतिमता की कमी के कारण, एक अर्थ में कोई बहस नहीं है, क्योंकि बहस करने के लिए कोई स्पष्ट रूप से परिभाषित शब्द नहीं हैं। मुझे लगता है कि शेफ़र के साथ वैज्ञानिक सामग्रियों ने उन्हें पाठ को फिर से देखने के लिए प्रेरित किया है, और फिर आप देखते हैं कि पाठ कुछ निश्चित स्थान या स्वतंत्रता की अनुमति देता है, वैज्ञानिक डेटा के अनुसार, जहां यह आपको घुमाए या विकृत किए बिना ले जा सकता है। मूलपाठ। इसलिए मुझे लगता है कि ये चीजें महत्वपूर्ण हैं। विज्ञान के प्रति शत्रुता से बचें, बाइबल के कथनों को सिद्धांतों में फिट करने के लिए बाध्य करने का प्रयास न करें, लेकिन दूसरी ओर, वैज्ञानिक खोजों को अच्छी तरह से स्थापित होने दें, और पाठ को फिर से जांचने और वास्तव में यह देखने के लिए एक प्रेरणा हो सकती है। कहते हैं।

2. गैर-वास्तविक दिन संख्या 2. उत्पत्ति 1 के दिनों, वर्षों या दिनों के प्रकार के अंतर्गत गैर-वास्तविक दिन हैं। एक गैर-वास्तविक दिन क्या है? मुझे लगता है कि हम चित्रण के माध्यम से देखेंगे। सामान्य तौर पर, यह एक ऐसा दृष्टिकोण होगा जो उत्पत्ति 1 के दिनों और भगवान की रचनात्मक गतिविधि के अनुक्रम या प्रक्रिया के बीच कोई वास्तविक ऐतिहासिक संबंध नहीं देखता है। अब गैर-वास्तविक दिन के दृश्यों की कई किस्में हैं।

एक। प्रतीकात्मक या तार्किक क्रम वाले दिन पहला जो छोटा होगा (ए) ओरिजन का एक दृश्य है। ओरिजन 185-253 ई. में अलेक्जेंड्रिया के एक चर्च फादर थे। उन्होंने उत्पत्ति 1 के दिनों को ईश्वर की रचनात्मक गतिविधि के क्रम के प्रतीक के रूप में देखा। उनका कहना है कि सृष्टि एक क्षण में अस्तित्व में आ गई और छह दिन एक तार्किक क्रम के सूचक मात्र हैं।

ऑरिजन कहते हैं, "कोई भी अच्छा दिमाग वाला व्यक्ति यह स्वीकार नहीं कर सकता कि वास्तव में सूरज, चंद्रमा और सितारों के बिना पहला, दूसरा और तीसरा दिन और साथ ही एक शाम और सुबह भी होती थी।" चौथे दिन की उस समस्या पर वापस लौटते हुए, और उसके पास एक मुद्दा है। सृष्टि एक क्षण में घटित हो गई और छह दिन एक तार्किक क्रम के द्योतक मात्र हैं। यदि आप पृष्ठ 7 को देखते हैं जो मैंने अभी-अभी आपकी ग्रंथसूची से सौंपा है, तीसरी प्रविष्टि, ऑरिजिन एन, *ऑन फर्स्ट प्रिंसिपल्स*, हार्पर एंड रो 1966, पृष्ठ 288, वह स्थान है जहां वह यह बयान देते हैं। तो यह चर्च की प्रारंभिक शताब्दियों से चले आ रहे गैर-वास्तविक दिन के दृश्य की एक किस्म है।

बी। ऑगस्टाइन का "दिन" का रूपकात्मक दृश्य ऑगस्टीन का दिन का एक गैर-वास्तविक दृश्य भी है। मुझे लगता है कि आप इसे रूपकात्मक प्रकार का दृष्टिकोण कहेंगे। उत्पत्ति 1 के दिनों के बारे में उनके कुछ कथनों से उनका क्या मतलब है, यह समझना आसान नहीं है। लेकिन ओलिवर बसवेल के *सिस्टमैटिक थियोलॉजी*, खंड 1 में, यह पृष्ठ 7 के शीर्ष पर है, वहां पहली प्रविष्टि है, पृष्ठ 142 से 144। वह ऑगस्टीन के रचनात्मक दिनों पर चर्चा करता है, और वह ऑगस्टीन के *सिटी ऑफ गॉड*, पुस्तक 11 खंड 6 में कहता है और 7, वह कहते हैं, "ये किस तरह के दिन हैं, इसकी कल्पना करना हमारे लिए बेहद मुश्किल या शायद असंभव है और इससे भी ज्यादा क्या कहना है।" वह ऑगस्टीन को उद्धृत कर रहा है। वह आगे कहते हैं, "सुबह तब लौटती है जब प्राणी सृष्टिकर्ता की प्रशंसा और प्रेम की ओर लौटता है, जब वह स्वयं के ज्ञान में ऐसा करता है, तो वह पहला दिन होता है। जब आकाश के ज्ञान में - ऊपर पानी और नीचे पृथ्वी के बीच के आकाश को यही नाम दिया गया है - वह दूसरा दिन है। और जब पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ पृथ्वी से निकलता है उन सभी का ज्ञान हो गया, तो वह तीसरा दिन है। और जब बड़े और छोटे प्रकाशमानों और सभी सितारों के ज्ञान में, वह चौथा दिन है। इत्यादि। बसवेल टिप्पणी करते हैं, "ऐसा लगता है कि ऑगस्टाइन ने रचनाकार की प्रशंसा और प्रेम दोनों के बदले में प्राणी के आध्यात्मिक अनुभवों को संदर्भित करने के लिए इस पवित्र ग्रंथ में "दिन" शब्द का इस्तेमाल किया।

सृजन के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए।" वह टिप्पणी करते हैं, "हम ऑगस्टाइन को अपने मानकों और व्याकरणिक या ऐतिहासिक व्याख्याशास्त्र के नियमों के आधार पर नहीं आंक सकते, वह अपनी व्याख्या में कुख्यात थे, हम केवल यह नोट कर सकते हैं कि पांचवीं शताब्दी में चर्च के यह महान पिता, शायद प्रेरित के बाद से सबसे गहरे धर्मशास्त्री थे।" बाइबल के प्रति निर्विवाद रूप से वफ़ादार पॉल ने उत्पत्ति की रचना के दिनों की व्याख्या उस तरीके से की जो हमें काफी काल्पनिक लगता है। ऐसा लगता है कि यह दिनों का एक रूपक प्रकार का दृश्य है। भगवान की रचनात्मक गतिविधि में किसी भी ऐतिहासिक अनुक्रम के संबंध में वे गैर-वास्तविक दिन हैं, यही बात है। इसका संबंध ईश्वर के रचनात्मक कार्य पर प्रतिक्रिया देने में आस्तिक के आध्यात्मिक अनुभव से अधिक है।

सी। रहस्योद्घाटन दिवस गैर-वास्तविक दिन के अंतर्गत एक तीसरी श्रेणी, रहस्योद्घाटन दिवस दृश्य होगी। यह सी होगा. रहस्योद्घाटन दिवस दृश्य. पृष्ठ 7 के मध्य में आपकी ग्रंथ सूची में आप देखते हैं, डीजे वाइसमैन, *उत्पत्ति भाग 2 में सृजन के सुराग*, छह दिनों में सृजन का खुलासा। डीजे वाइसमैन ने तर्क दिया कि भगवान ने छह दिनों में मूसा को सृष्टि का खुलासा किया। इसलिए कि उत्पत्ति 1 के दिन सृजन के समय का संकेत देने वाले सौर दिन या युग के दिन नहीं हैं, बल्कि वे रहस्योद्घाटन के समय का संकेत देने वाले सौर दिन हैं। यह सृष्टि छः दिन में प्रगट हुई। मुझे उत्पत्ति अध्याय 1 में इसे ढूंढना बहुत मुश्किल लगता है। ऐसा लगता है कि जो बात की जा रही है वह मूसा को छह दिनों की रहस्योद्घाटन गतिविधि में उसने जो किया था उसके बारे में भगवान का रहस्योद्घाटन नहीं है, बल्कि रचनात्मक गतिविधि के संदर्भ में उसने वास्तव में क्या किया है। लेकिन यह दृश्य निश्चित रूप से सृष्टि के दिनों के संबंध में एक गैर-वास्तविक दिन का दृश्य है।

अब देखें कि इसके पीछे क्या है, यह अपेक्षाकृत हाल ही की बात है—1977—में फिर से सोचता हूं, क्या यह विज्ञान और शास्त्र का सामंजस्य है? यदि आपके पास ईश्वर की रचनात्मक गतिविधि में एक निश्चित अनुक्रम है, तो आप उसे उस अनुक्रम के साथ कैसे मिलाएंगे जो वैज्ञानिक हमें अनुक्रम के बारे में बता रहे हैं और हम विभिन्न जीवन रूपों के

निर्माण के संबंध में क्या पा सकते हैं? यदि आप उत्पत्ति अध्याय 1 से अनुक्रम हटा देते हैं तो आपको कोई समस्या नहीं रहेगी।

4. फ्रेमवर्क परिकल्पना: एक साहित्यिक उपकरण के रूप में "दिन" अगला दृश्य जिसका मैं उल्लेख करूंगा, जो एक गैर-वास्तविक दिन का दृश्य है, मैं कहूंगा कि यह समकालीन इंजीलवादियों के बीच सबसे लोकप्रिय है, जो गैर-वास्तविक को मानते हैं। दिन का दृश्य. मैं इसे रूपरेखा परिकल्पना या दोहरा समरूपता विचार कहूंगा। संभवतः अंग्रेजी लेखन में इसका सबसे प्रभावशाली समर्थक एनएच रिडरबोस है, यह पृष्ठ 7 पर आपकी चौथी प्रविष्टि है। उनकी छोटी पुस्तक, "इज़ देयर ए कॉम्प्लिक्ट बिटवीन जेनेसिस 1 एंड नेचुरल साइंस," एर्डमैन्स, 1957 में। यह एक डच से अनुवाद है किताब। बाद में उन्होंने 1963 में इसी विषय पर एक अधिक व्यापक खंड लिखा, जिसे मैंने वहां डच में सूचीबद्ध किया है, लेकिन इसका अंग्रेजी में अनुवाद कभी नहीं किया गया। रिडरबोस के विचार में उत्पत्ति 1 के 7 दिन एक साहित्यिक रूपरेखा हैं जिसमें सृजन कथा निर्धारित की गई है, इस प्रकार रूपरेखा परिकल्पना है। यह एक साहित्यिक ढाँचा है जिसमें सृजन कथा स्थापित की जाती है। इसके विचार में दिन एक साहित्यिक उपकरण हैं और इन्हें कालानुक्रमिक महत्व के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। यह सिर्फ एक शुद्ध और सरल साहित्यिक उपकरण है - इसका कोई कालानुक्रमिक महत्व नहीं है। वे गैर-वास्तविक दिन हैं, वे वे दिन नहीं हैं जो वास्तव में घटित हुए थे। यह सृजन की कहानी बताने के लिए एक साहित्यिक रूपरेखा है। रिडरबोस कहते हैं, "उत्पत्ति 1 के छह दिन स्पष्ट रूप से 2 त्रिदोमों के योग के रूप में अभिप्रेत हैं - अर्थात्, तीन के 2 सेट - जो परिणामस्वरूप एक स्पष्ट रूप से स्पष्ट समानता को प्रकट करते हैं, जबकि कुल व्यवस्था का उद्देश्य उत्कृष्ट महिमा को बोलूँ राहत देना है वह मनुष्य जो सब के दिन अपनी वास्तविक नियति प्राप्त करता है। सृजन वृत्तांत की इस योजना को देखते हुए हम इस बीच यह अनुमान लगा सकते हैं कि लेखक ने जानबूझकर दिन और रात, शाम और सुबह को साहित्यिक ढाँचे के रूप में इस्तेमाल किया है। विशिष्ट क्रम लेखक की कार्य पद्धति से संबंधित है, न कि ईश्वर के रचनात्मक कार्यों से। आदेश लेखक का है, कार्य का

नहीं - ईश्वर के रचनात्मक कृत्यों का नहीं। हालाँकि यह इस विचार का प्रतीक हो सकता है कि सृष्टि सुव्यवस्थित है।

1-3 और 4-6 दिनों की समानता अब आप देखिए कि उसने क्या किया। उन्होंने पहले तीन दिनों और दूसरे तीन दिनों के बीच एक समानता बनायी। पहले दिन आपके पास प्रकाश है, जबकि चौथे दिन आपके पास प्रकाश वाहक हैं - सूर्य, चंद्रमा और तारे। दूसरे दिन आपके पास आकाश और ऊपर और नीचे पानी का विभाजन होता है, जबकि पांचवें दिन में आपके पास मछलियाँ और पक्षी होते हैं। समानता एक ऐसी चीज़ है जिस पर विवाद है लेकिन आप शायद इसे वहां देख सकते हैं, या शायद आपको इसमें कोई समस्या मिलेगी। लेकिन तीसरे दिन, आपके पास समुद्र और वनस्पति से अलग हुई सूखी भूमि है, और फिर आपके पास पृथ्वी के निवासी हैं - छठे दिन से मेल खाने वाले जानवर और मनुष्य। यह विशेष महत्व के सातवें दिन, सब्बाथ तक ले जाता है, आप सब्बाथ में आराम पाते हैं।

अब, मुझे इसे थोड़ा ऊपर बढ़ाने दीजिए। आपके पास 8 रचनात्मक कार्य हैं—पहले 3 दिनों में 4, दूसरे 3 दिनों में 4। इसका मतलब है कि आपके पास तीसरे और छठे दिन 2-2 हैं। उन रचनात्मक कृत्यों का परिचय "और भगवान ने कहा" वाक्यांश द्वारा दिया जाता है। यदि आप अध्याय में नीचे जाते हैं तो आप पाते हैं कि वाक्यांश "और भगवान ने कहा" दोहराया गया है। आप श्लोक तीन में देखते हैं "और भगवान ने कहा कि प्रकाश हो।" पहले दिन हमारे पास यह एक बार होता है। फिर श्लोक छह "और भगवान ने कहा कि वहाँ एक आकाश हो।" वह दूसरा दिन है। श्लोक नौ "और भगवान ने कहा" तीसरे दिन है, लेकिन श्लोक ग्यारह में आप देखते हैं कि तीसरे दिन आपके पास दो हैं - श्लोक 9 और श्लोक 11। फिर श्लोक 14 आपके पास है "और भगवान ने कहा;" श्लोक 20 "और भगवान ने कहा;" और श्लोक 20 है "और भगवान ने कहा" वह पांचवां दिन है, और फिर श्लोक 24 "और भगवान ने कहा" और 26, आपको छठे दिन दो मिलते हैं। तो आपको तीसरे और छठे दिन दो-दो मिलते हैं, और कुल मिलाकर 8 मिलते हैं। तो अध्याय की उस तरह की एक योजनाबद्ध संरचना के साथ, निष्कर्ष निकाला जाता है कि आपके पास यहां जो कुछ है वह

सृजन खाते की संरचना करने के लिए एक साहित्यिक उपकरण है और वे दिन वास्तव में ईश्वर की रचनात्मक गतिविधि के दिन नहीं हैं, वे ईश्वर के रचनात्मक कार्यों को प्रस्तुत करने में लेखक की एक साहित्यिक युक्ति हैं।

बसवेल ने अपने *व्यवस्थित धर्मशास्त्र के खंड एक में* इस दृष्टिकोण पर चर्चा की है। पृष्ठ 143 पर, वह इसके बारे में क्या कहते हैं, वह रिडरबोस की पुस्तक का उल्लेख करते हैं, और फिर वह कहते हैं, "मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि तीन-तीन दिनों के दो समूहों के बीच कथित समरूपता मुझे बादलों में चेहरे देखने जैसी लगती है। हां, चेहरे वास्तव में वहां हैं और जिन लोगों को वे बताए गए हैं, वे उन्हें देख सकते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या उनका इरादा था? एक व्यक्ति बादलों में एक चेहरे के रूप में जो देखता है उसे अन्य लोग एक जानवर या पेड़ के रूप में देख सकते हैं, और एक ही व्यक्ति एक ही बादल के निर्माण को दो अलग-अलग पैटर्न में देख सकता है, यह कुछ हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि वह अपनी दृष्टि को कैसे निर्देशित करता है। मैं इस बात पर बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं हूँ कि मूसा, पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, 1-4, 2-5, और 3-6 दिनों के बीच किसी समानता का इरादा रखता था। एक बात तो यह है कि यदि दिनों का मिलान किया जाए तो मुझे ऐसा लगेगा कि दिन 3 का मैच, दिन 5 का मैच, दिन 6 के मैच से बेहतर है।" दूसरे शब्दों में, यदि आप एक समानता देखना चाहते हैं, तो वह समुद्र से अलग हुई सूखी पृथ्वी और पृथ्वी के निवासियों-जानवरों और मनुष्य की तुलना में मछलियों और पक्षियों के साथ वनस्पति को अधिक देखता है। और समानता 3 और 6 की तुलना में 5 और 3 के बीच अधिक मजबूत लगती है।

फिर वह आगे बढ़ता है और कहता है, "ऐसे अन्य बिंदु भी हैं जिनमें मैं उस समानता को नहीं देख सकता।" वह आगे कहते हैं, "निश्चित रूप से किसी के लिए यह देखना या कल्पना करना कोई विधर्म नहीं है कि वह इस तरह की इच्छित समानता देखता है। मुझे इस निष्कर्ष पर आपत्ति है कि रचना के छह दिनों में कथित दोहरी समानता किसी न किसी तरह से एक के बाद एक गिनाई गई घटनाओं के क्रम में विषय को मिटा देती है। दूसरे शब्दों में, उसे अनुक्रम के विचार से छुटकारा पाने पर आपत्ति है। लेकिन यदि आप दिनों को एक

साहित्यिक उपकरण के रूप में लेते हैं जिसका छह दिनों में भगवान की रचनात्मक गतिविधि से कोई लेना-देना नहीं है, तो आपने भगवान की रचनात्मक गतिविधि में अनुक्रम के अध्याय से छुटकारा पा लिया है। और निश्चित रूप से यह रिडरबोस का मुद्दा है - वह ऐसा करना चाहता है, क्योंकि आपने देखा है कि उसकी पुस्तक का शीर्षक है, "क्या उत्पत्ति 1 और प्राकृतिक विज्ञान के बीच कोई विरोधाभास है?" और जिस तरह से वह कथित संघर्ष से बचता है वह उत्पत्ति अध्याय 1 को किसी भी अनुक्रम से मुक्त करना है।

अब आप इस प्रश्न पर वापस आते हैं, क्या आप अध्याय पर कुछ ऐसा थोप रहे हैं जो वैज्ञानिक डेटा से उत्पन्न होता है जो वास्तव में अध्याय के साथ न्याय नहीं करता है? मैं इस दोहरे समरूपता दृष्टिकोण पर थोड़ा आगे चर्चा करना चाहता हूँ। कुछ अन्य आपत्तियाँ भी हैं जो मुझे इस दृष्टिकोण के लिए महत्वपूर्ण लगती हैं। मैं कहूँगा कि मुझे लगता है कि यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है क्योंकि तेजी से इंजीलवादी इस पर जोर दे रहे हैं।

टी ऑस्टिन होल्ट द्वारा लिखित
रफ का संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा किया गया,
अंतिम संपादन राचेल ऐश ले द्वारा किया गया
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया